सितम्बर माह के लिए निमन्त्रण-पत्र

रोहिणी मेनन द्वारा लिखित

श्रीगुरुमाई ने सन् २०१६ से सिद्धयोगियों और नए साधकों को निर्देशित किया है कि वे सितम्बर माह को आत्मसात्करण का अभ्यास करने के प्रति समर्पित करें। इन वर्षों में, उन्होंने आत्मसात्करण के अभ्यास पर बहुत ज़ोर दिया है। गुरुमाई जी ने सिखाया है कि आत्मसात्करण द्वारा हम शक्ति को अपने अन्दर सँजोकर रख पाते हैं और अपने अभ्यासों के फल का अनुभव कर पाते हैं। इस सन्दर्भ में, गुरुमाई जी ने कहा कि सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर सन् २०२६ का उनका सन्देश एक-एक पंक्ति करके पूरे सितम्बर माह में पोस्ट किया जाए जिससे मनन करने में हमें आसानी हो और उनके सन्देश की शक्ति में पूरी तरह तल्लीन होने के लिए हमें सम्बल मिले।

जब मैं 'सितम्बर माह के लिए निमन्त्रण-पत्र' भेजने के बारे में गुरुमाई जी से बात कर रही थी तब उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा, "तुम्हें एक कहानी सुननी है?"

मैंने कहा, "जी, मुझे कहानी *ज़रूर* सुननी है!" गुरुमाई जी ने कहानी सुनाई और वह कहानी मुझे इस प्रकार याद है :

> अपनी तीसरी विश्वयात्रा के दौरान, बाबा मुक्तानन्द सॅन्टा मॉनिका, कैलिफ़ोर्निया गए थे जहाँ उन्होंने सत्संग किए, दर्शन दिए और शक्तिपात ध्यान-शिविर आयोजित किए। गुरुमाई जी इस टीचिंग्स विसिट पर बाबा जी की भाषान्तरकार थीं। इस यात्रा पर, बाबा जी और स्टाफ़, एक ऐसे होटल में रुके थे जिसके ठीक सामने प्रशान्त महासागर था।
>
> एक दिन सुबह-सुबह, भोर से कहीं पहले, जब गुरुमाई जी बाहर आईं और उन्होंने पश्चिमी क्षितिज की ओर देखा तो वह नज़ारा देखकर वे विस्मयमुग्ध हो गईं। वहाँ दूर एक महाकाय, सुनहरा गोलाकार मण्डल दिखाई दिया जो प्रखरता से जगमगा रहा था और नीचे पानी को आलोकित कर रहा था।
>
> यह एक अविश्वसनीय दृश्य था। गुरुमाई जी ने ऐसा दृश्य पहले कभी नहीं देखा था। उन्होंने सोचा, "ऐसा अनुभव मुझे ध्यान में होता है तो मैं निश्चित *ही* ध्यान में हूँ!" वे यह कल्पना ही नहीं कर पा रही थीं कि ऐसा दृश्य जाग्रतावस्था में भी दिख सकता है।

ऐसा लगा मानो इस दृश्य को निहारते हुए एक युग बीत गया हो। अन्ततः, गुरुमाई जी नीचे उतरकर बगीचे में गईं जहाँ उन्हें कुछ अन्य सेवाकर्ता मिले। उन्होंने सेवाकर्ताओं से कहा कि वे उनके साथ आकर वह दृश्य देखें जो उन्होंने देखा था और इस बात की पुष्टि करें कि वह दृश्य उनकी परमानन्द की स्थिति से तो नहीं उभर रहा है। जब गुरुमाई जी ने देखा कि क्षितिज पर सुनहरे गोलाकार मण्डल को देखकर वे लोग भी हर्ष और उल्लास से भर उठे हैं तो उन्हें समझ में आया कि वह वास्तव में चन्द्रमा ही था!

प्रशान्त महासागर पर पूर्णिमा का चन्द्र देखने का गुरुमाई जी का यह पहला अनुभव था। और गुरुमाई जी को यह स्पष्ट याद है कि किसी ने उत्साहित होकर कहा था, "ओहो! यह तो 'हार्वेस्ट मून' है!" ['हार्वेस्ट मून' यानी फसल काटने वाले महीने का चाँद।]

गुरुमाई जी ने यह भी बताया कि यह दृश्य तबसे उनकी चेतना में अंकित हो गया है।

जब गुरुमाई जी ने कहा कि पूर्णिमा का वह चाँद जो उन्होंने देखा था, वह 'हार्वेस्ट मून' के जैसा था तो मेरे लिए वह एक 'अहाऽऽ! का क्षण' था। मुझे ध्यान आया कि सिद्धयोग पथ पर आत्मसात्करण का वार्षिक अभ्यास सितम्बर माह में होता है जिस माह में फसल काटी जाती है। तो मैं अंग्रेज़ी के 'हार्वेस्ट' शब्द का महत्त्व जानने के लिए उत्सुक हो गई।

आधुनिक अंग्रेज़ी शब्द 'हार्वेस्ट' का उद्भव प्राचीन अंग्रेज़ी शब्द 'हारफ़ेस्ट' से हुआ, जिसका अर्थ है 'ऑटम' [शरद ऋतु]। कुछ आधुनिक शब्दों की व्युत्पत्ति का पता लगाने के लिए ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान के विशेषज्ञ प्राचीन सभ्यताओं और उनकी भाषाओं के सुराग़ ढूँढ़ते हैं। उनके अनुसन्धान से हमें यह पता चला है कि 'हार्वेस्ट' शब्द का मूल 'कर्प' माना जाता है जिसका अर्थ है 'तोड़ना' या 'एकत्र करना'। चार सहस्राब्दियों से, जैसे-जैसे संसार की भाषाओं में व्यापक परिवर्तन आए, 'कर्प' शब्द का स्वर भी विकसित होता गया। 'क' का स्वर बदलकर 'ह' हो गया और 'प' का स्वर बदलकर 'फ़' हो गया। लगभग ग्यारहवीं शताब्दी तक 'हारफ़ेस्ट' शब्द प्रयोग में था। धीरे-धीरे, 'हारफ़ेस्ट'—और अन्ततः 'हार्वेस्ट'—के अर्थ में न केवल शामिल हो गया है, वह समय जब फसल एकत्र की जाती है, बल्कि उसमें स्वयं फसल *और* उस फसल को एकत्र करने का कार्य भी शामिल हो गया है।

जब मैं पूर्णिमा के चन्द्रमा के बारे में गुरुमाई जी का अनुभव सुन रही थी तो मैं सहजता की स्थिति में पहुँच गई। मैं उस दृश्य में मानो निमग्न हो गई थी। आत्मसात् करने और फसल काटने के परस्पर

सम्बन्ध के बारे में मुझे एक बोध हुआ और मैं गुरुमाई जी से पूछना चाहती थी कि उनकी बात को क्या मैंने ठीक तरह से समझा है। मैंने उनसे पूछा, "क्या यह कहानी यह दर्शाती है कि कभी-कभी एक साधक को चाहिए कि वह अनुभव को अपने पास आने दे?"

गुरुमाई जी ने कहा, "हाँ। लोग 'प्रयत्न करने' में पूरी तरह लग जाते हैं और अनुभव से वंचित रह जाते हैं।

मैंने प्रत्युत्तर में कहा, "तो अनुभव हमेशा ही उपलब्ध होता है और साधक को चाहिए कि वह बस उसे होने दे?"

गुरुमाई जी ने कहा, "हाँ। और जब इस तरह का अनुभव होता है तो वह एक जादू-समान होता है। ये ज्योतिर्मय आकाशीय पिण्ड—वे तुम्हें इसका एक बहुत ही प्रत्यक्ष अनुभव देते हैं कि जादू वास्तव में क्या है।"

तो अब, एक बार फिर इस सितम्बर माह पर वापस आते हैं और देखते हैं कि यह हम सबके लिए कैसा गुज़रेगा। एक साधक के रूप में इस पूरे वर्ष अपनी सिद्धयोग साधना करते हुए हमने जो प्रयत्न किए हैं, उनकी भरीपूरी फसल का लाभ उठाने का यह निश्चित रूप से हमारे लिए सही माह है। गुरुमाई जी ने १ जनवरी को 'मधुर सरप्राइज़' में अपना सन्देश प्रदान किया था, और तबसे हम उनके सन्देश पर मनन करते आ रहे हैं एवं सिद्धयोग अभ्यास करते आ रहे हैं।

तो सितम्बर माह के लिए गुरुमाई जी जो कह रही हैं, उसे मैं इस प्रकार समझ रही हूँ, "शान्ति से बैठो और अपनी साधना के फल का आनन्द लो।" इस तरह से हमारा मार्गदर्शन कर गुरुमाई जी हमसे कह रही हैं कि हमने अब तक जो कुछ किया है, उसे हम सराहें। आइए, इस सितम्बर माह में समय निकालकर, गुरुमाई जी के २०२६ के सन्देश को इस समझ के साथ पुनः देखें कि हम सन्देश के फल का अनुभव कर रहे हैं—हम उसके मंगलमय सौन्दर्य को देख रहे हैं, उसके मनभावन स्वाद को चख रहे हैं, उसकी लुभावनी सुगन्ध को श्वास में भर रहे हैं।

इस माह में, आत्मसात् करने का अभ्यास करते हुए, आइए, अपने लिए कुछ ऐसा करें जो दयालुतापूर्ण हो, हम अपने साथ कोमलता से पेश आएँ। हम ऐसा कैसे करेंगे? इसके लिए मैं जो अभ्यास करती हूँ, वह आपके साथ साझा करना चाहती हूँ : जब मेरा मन मुझे इस तरह के विचारों से कचोटता रहता है, "मैं ऐसा कर सकती थी," "मैं यह थोड़ा *और* कर सकती थी," "मैं वैसा कर

सकती थी," "मैं वह थोड़ा *और* कर सकती थी," तो मुझे अपने भीतर गुरुमाई जी की आवाज़ यह कहते हुए सुनाई देती है, "रोहिणी, इस सबकी ज़रूरत नहीं है। बस, ऐसे विचारों को छोड़ दो।"

सितम्बर माह के विषय में मैं जो समझ रही हूँ, वह यह कि आत्मसात् करने के अभ्यास के दौरान अब न तो हम बीज बो रहे हैं और न ही खेत की जुताई कर रहे हैं। हम फसल काट रहे हैं!

जब मैं आप सबको सिद्धयोग पथ पर सितम्बर माह के लिए यह निमन्त्रण-पत्र लिख रही थी तब मेरे मन में एक दृश्य उभरा जो मैं आप सबके साथ साझा करना चाहती हूँ। सन् २०२६ के श्रीगुरुमाई के सन्देश की हर पंक्ति पर पुनः विचार करते हुए आप यह मानस-चित्रण कर सकते हैं कि आप एक ऐसे खेत को देख रहे हैं जो आपकी मनपसन्द नेमतों से भरा है—मक्का, गेहूँ, चावल, ट्यूलिप, लैवेण्डर व सूर्यमुखी के फूल, चारों तरफ़ जंगली फूलों की बहार, या फलों से लदे बगीचे। सम्भावनाओं की कोई सीमा नहीं है! इस विहंगम दृश्य का अनुभव करें। आपके श्वास में तनावमुक्त होने का जो गहरा एहसास है, उसका आनन्द लें। इस वर्ष आप जो साधना करते आ रहे हैं, उसके लिए अपने हृदय में कृतज्ञता अनभुव करें। देखें कि कैसे आपका समूचा अस्तित्व आपकी साधना के फल के अद्भुत अनुभव में डूबकर तृप्ति प्राप्त करता है।

सन् २०२६ के श्रीगुरुमाई के सन्देश को आत्मसात् करने के साथ-साथ, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर एक गैलरी के माध्यम से हमें गुरुमाई जी के दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य भी मिलेगा। प्रति सप्ताह इस गैलरी में श्री मुक्तानन्द आश्रम में जनवरी २०२६ से लेकर अगस्त के बीच के विविध नए दृश्यों का चित्रण होगा। इस गैलरी का शीर्षक है, 'गुरुमाई चिद्विलासानन्द के सान्निध्य में।'

आपको यह निमन्त्रण है कि आप इस सितम्बर माह का पूरा-पूरा लाभ उठाएँ। कैसे? अपनी साधना के फल की फसल काटें और हर रोज़ सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर जाएँ।

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।